अब तीव्र योग साधना को बढ़ाओ, साधना ही साधनों से वैराग्य दिलायेगी

आज अपनी सिकीलधी दोनों दादियों का सन्देश लेकर बाबा के पास पहुंची तो दूर से क्या देखा कि हमारे पहले ही दोनों दादियां बाबा के पास पहुंची हुई हैं। जैसे साकार में बापदादा कमरे में गद्दी पर बैठ मिलते थे ऐसे ही आज वतन में दोनों दादियों से अति स्नेह रूप में मिल रहे थे, मीठी मीठी बातें कर रहे थे और कुछ फल आदि खिला खा भी रहे थे। मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ते यह स्नेह भरा मिलन देखते आगे बढ़ती पहुंच गई तो दोनों दादियां बोली, बाबा हम अपनी त्रिमूर्ति मूर्त को याद ही कर रही थी, उसकी ही कमी थी -

आओ गुल्जार बहन आओ, अच्छे समय पर आप भी पहुंच गई। और मैं भी दोनों दादियों के साथ बैठ मिलन मौज मनाने लगी। कुछ समय बाद बाबा बोले, आप त्रिमूर्ति बच्चों को देख बापदादा बहुत दिल की दुआयें देते हैं और वाह मेरे दिल खुश बच्चे वाह! के गीत गाते हैं कि आपस में विचार मिलाते, हाँ जी का पाठ पक्का कर एक दो के संकल्प संस्कार को मिलाते रिगार्ड देते, बेहद की सेवा को बढ़ा रहे हैं। बस सदा सेवा के साथी बन, संगठन के लिए एग्जैम्पुल बन आगे बढ़ते रहो, उड़ते रहो, यही विधि है ब्राह्मण परिवार के संगठन को निमित्त बन आगे बढ़ाने की। बापदादा देख-देख हर्षित होते हैं। उसके बाद बाबा बोले, बच्ची क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा समाचार तो दोनों दादियों ने सुनाया ही होगा। तो बड़ी दादी बोली नहीं-नहीं हम तो मिलन मनाने में मस्त थी, यह तो आपकी ड्युटी आप बजाओ। मैंने सुनाया बाबा दादी जी आपके संकल्प को मानकर दो दिन चेकिंग कराने गई और बहुत प्यार से अथक बनकर कराई। आपको थैंक्स दे रही थी। बापदादा दोनों से मधुर नयन मिलन मनाते बोले, देखो बच्चियां आजकल के हालीवुड के एक्टर्स के लिए हर समय चेकिंग के लिए डाक्टर हाज़िर होते हैं। आप तो होली हैपीवुड की हीरो एक्टर्स हो तो आपकी चेकिंग भी समय प्रति समय होनी ही चाहिए क्योंकि आपसे तो सर्व ब्राह्मणों का प्यार है और साकार रूप में ब्राह्मण संसार के लिए आपके शरीरों का भी कितना महत्त्व है, यह सब जानते हैं। सबका संकल्प पूरा किया, अच्छा किया। ऐसे कहते दादी जी को तो बाबा ने अपने में समा लिया और पूछा और क्या समाचार है?

मैं बोली दादी जानकी कह रही थी कि आजकल विदेश में चारों ओर युद्ध का बहुत डर है और कहाँ कहाँ ब्राह्मण भी हलचल में आ जाते हैं। बाबा बोले बच्ची, यह भय तो अभी टैम्प्रेरी है लेकिन यह भय ही सबको वैराग्य वृत्ति में लायेगा कि यह सब साधन साथी कोई काम के नहीं हैं। कोई सहारा चाहिए। मन के टेन्शन के लिए कुछ और चाहिए, और आध्यात्मिकता की तरफ ध्यान जायेगा। आप सब बच्चे जो अब जोरशोर से चारों ओर सन्देश

देने की सेवा कर रहे हो, यह सन्देश याद आयेगा कि क्या था, क्या कहा था। इसलिए सन्देश देना और स्व प्रति याद की शक्ति ज्वाला रूप घण्टे बढ़ा रहे हो, समय अनुसार यह सेवा और योग शक्ति का प्रभाव पड़ना ही है। आपकी साधना, साधनों से वैराग्य दिलायेगी और सबका अटेन्शन एक की तरफ जायेगा। इसलिए बच्चे अब सर्व तरफ वैराग्य वृत्ति उत्पन्न कराने के लिए यह ईशारे मिले हैं। अब और तीव्र योग साधना को बढ़ाओ। अपने प्रति विघ्न-विनाशक बनने के लिए भी अब सिर्फ वाणी द्वारा वा भाग-दौड़ की सेवा द्वारा सफलता नहीं लेकिन योग शक्ति साथ सेवा चाहिए। योग शक्ति और वाणी की शक्ति दोनों साथ में इमर्ज चाहिए क्योंकि सिर्फ वाणी की शक्ति अच्छा है, अच्छा है यहाँ तक लाती है लेकिन योग शक्ति, वाणी की शक्ति का बैलेन्स अच्छा बनने की प्रेरणा देगी। बापदादा समाचार सुनते कि सिर्फ वाणी की सेवा करने में आपस में या अपने में विघ्न भी आते हैं। इसलिए इस वर्ष यह दृढ़ संकल्प करो - स्वयं प्रति वा सर्व आत्माओं के प्रति मुझे विघ्न-विनाशक बनना ही है, चाहे कोई और विघ्न रूप बने, प्रकृति वायुमण्डल विघ्न रूप बने लेकिन मुझे विजयी बनना ही है। विघ्नों का काम है आना, मेरा काम है विजयी बनना। ऐसे कहते ही बापदादा हम त्रिमूर्ति को बहुत-बहुत पॉवरफुल दृष्टि देते चारों ओर भी बहुत शक्तियों की सकाश देते बोले, सर्व विघ्न-विनाशक बच्चों को यादप्यार देना। ऐसे कहते ही हमने अपने को साकार वतन में देखा।